नव निर्माण®

भाग - २

विलास जैन

NEW ERA'S SELF HELP®

यह कार्य नही क्रांति है।

सर्मपण

यह पुस्तक समर्पित है
वसुंधरा के उन रक्षको को,
जो
इसे अपनी विरासत नही
बल्कि
अपने बच्चो की,
धरोहर मानकर
जतन करते है।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।
विलास जैन

यह कार्य नही क्रांति है।

नव निर्माण®

प्रकाशन	:	प्रथम
प्रकाशक	:	विलास जैन
लेखन	:	विलास जैन
प्रतिया	:	१०००
चित्रांकन	:	कमलेश गायकवाड
अक्षरांकन	:	विलास जैन
निर्मिती	:	विलास जैन
मुद्रक	:	विश्वरुपा प्रिंटस्, जलगांव

© All Rights reserved 2013
New Era Self Help Marketing India Ltd. is registered in India under Public Ltd. Company Reg.No. : U 51909 MH 2002 PLC 138100

सर्वाधिकार सुरक्षित –
पूर्वानुमती के बिना इस पुस्तक में से किसी भी अंश को किसी भी कारण से या किसी भी रुप में पुनर्मुद्रित नहीं किया जा सकेगा। इस प्रकाशन के संदर्भ में अनधिकृत कृति का पता चलते ही संबंधित व्यक्ति या संस्था पर हानि के संदर्भ में कानूनी कारवाई की जायेगी।

यह कार्य नही क्रांति है।

प्रस्तावना ...

बढ़ती स्पर्धा के कारण स्कूलों में अभ्यास क्रम बढ़ रहा है। दूसरी तरफ जीवन की बढ़ती जरुरतों को पूरा करने माँ–बाप की व्यस्तता बढ़ रही है। इसी के कारण हम इच्छा और साधन होते हुए भी हमारे बच्चों को हमारी परंपरा, संस्कार, अच्छी आदतें जैसी अमूल्य चीजें नहीं दे पा रहे हैं। आज हम वह सब नहीं कर पाते जिससे की आने वाली पीढ़ी सुसंस्कृत और सुदृढ़ बने। जीवन की छोटी छोटी बातें जो अच्छा इन्सान बनने के लिए जरुरी है, वह बच्चो के सामने सरल शब्दों में रखना, यह इस किताब का प्रथम लक्ष्य है। हमारे बच्चे सिर्फ पैसे कमाने की मशीन नहीं बल्कि पैसों का सदुपयोग कर एक अच्छा समाज बनायें। जीवन का भरपूर मजा उठायें और सही मायने में सुखी और समाधानी हो। ऐसा पवित्र और उतना ही अनूठा ध्येय हमारा है। इसी के साथ बच्चों का जीवन के हर पहलू के तरफ देखने का नजरिया बदले। उन्हें एक सकारात्मक नजरिया मिले। इस बात का ध्यान हर कविता में रखा गया है।

हम जो लक्ष्य लेकर चल रहे है उसमे माता, पिता और गुरुजनों का सहकार्य, प्रेम और सुझाव अनिवार्य होगा। पच्चीस–पच्चीस कविताओं के चार खण्ड पहले वर्ग से लेकर तो नवमी कक्षा के बच्चों के लिए बनाये गये है। जीवन के कुल १०० महत्वपूर्ण विषयों पर कवितायें रची गई है। अपने बच्चों के हृदयमें इसमें से कुछ कवितायें भी हम उतार सके तो वे कभी असफल, निराश या बीमार नहीं होंगे ऐसा हमारा मानना है। और हम सुनहरे भविष्य में एक सुदृढ़ कड़ी जोड़कर हमारा सामाजिक दायित्व पूरा कर सकेगें। अन्त में इतना ही लिखूंगा की इस किताब से मिलनेवाली पूरी राशि समाज, पर्यावरण की सुरक्षा और पेड़ पौधे लगाने में ही खर्च होगी। जिससे हम आनेवाली पीढ़ी के लिए एक सुदृढ़ समाज, सुखद पर्यावरण एवं सुंदर धरती छोड़ सकेंगे।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।

विलास जैन

यह कार्य नही क्रांति है।

सूची

अ.नं.	विषय	पृष्ठ क्र.
१)	संस्कार	०१
२)	सपने	०२
३)	लक्ष्य	०३
४)	मेहनत और लगन	०४
५)	आत्मविश्वास	०५
६)	इच्छा शक्ति	०६
७)	विचार	०७
८)	सच्चाई	०८
९)	स्वाभिमान	०९
१०)	स्वावलंबन	१०
११)	स्वस्थ शरीर	११
१२)	समय सूचकता	१२
१३)	विद्यार्जन	१३
१४)	विनम्रता	१४
१५)	सामान्य ज्ञान	१५
१६)	हम कैसे जीएँ	१६
१७)	जरुर करो	१७
१८)	कभी मत करना	१८
१९)	सुनें ज्यादा बोले कम	१९
२०)	जान से प्यारा देश	२०
२१)	बापू	२१
२२)	किस्सा ये वतन	२२
२३)	भाईचारा	२३
२४)	प्रदूषण	२४
२५)	मेरा देश विशेष	२५

संस्कार

बच्चो संस्कार घड़ना चाहिये
जैसे घड़ा घड़ता कुम्हार,
घड़ने के कारण मिट्टी
बनती मानवता का आधार।

हमे जानवर बननेसे रोकते
जीवन मे अच्छे संस्कार,
इनके बिना जीवन
चला जायेगा बेकार।

अच्छे गुण, सोच, आचरणको
कहते हैं, देखो संस्कार,
इनके कारण ही हुआ
इस धरापर मानवका उध्दार।

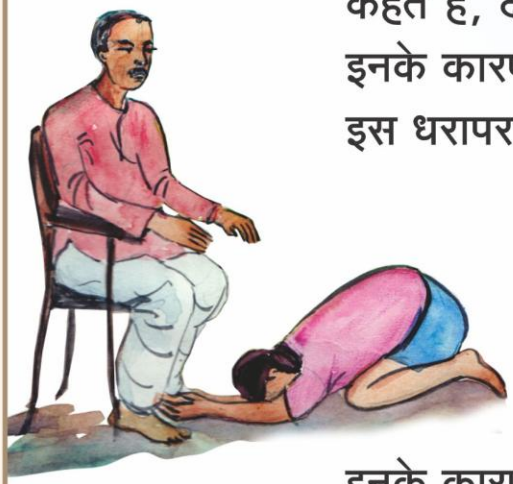

बच्चो देखो बिना इनके
तुम बहोगे बीच मझधार,
अच्छे संस्काराकों अपनाओ
होगें तुम संकटोसे पार।

इनके कारण जाने जाते
राम, रहीम उनके अवतार,
जिज्ञासा, जिद और कर्मोको
दो अच्छे संस्कारोका आधार।

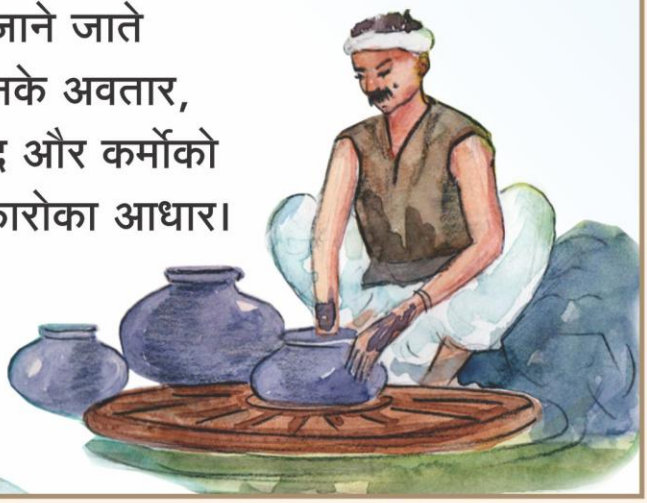

सपने

सपने कभी लगते अपने
तो कभी हो जाते बेगाने,
कभी लगते हमको हँसाने
तो कभी लगते है रूलाने।

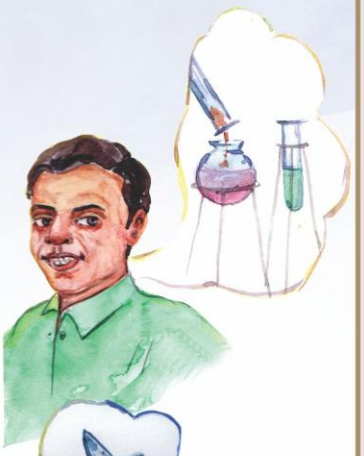

बच्चो लगो तुम भी
सपनोंको नयनोमें अपने बसाने,
महान हस्तियोंने देखे थे
कामयाबी के सपने सुहाने।

स्वस्थ मन और शरीर
देखते निर्भयता के सपने,
अच्छे सपनोंके साथ जोड़ो
कर्मठता और निष्ठा को अपने।

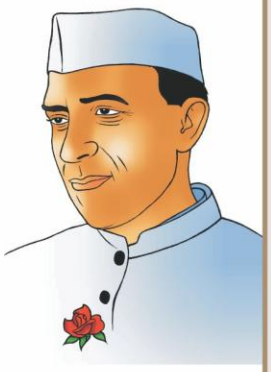

सपने साकार करने वाले
बच्चे लगते सबको लुभाने,
पढ़ो लिखो, खेलो कूदो
काम आयेगें सपने सच बनाने।

लक्ष्य

फैसला गर करलो कोई
अच्छा कार्य पूरा करनेका,
इसी को कहते है
कार्य लक्ष्य बनानेका।

कोई कहता इसको मंजिल
कोई कहता है साहिल,
मेहनत और सच्चाई से
होता है सबकुछ हासिल।

ना सिर्फ लक्ष्य बनाओ
इस पर अमल फर्माओ,
लक्ष्य बनाना आसान नही
तुम कुछ कर दिखाओ।

पहले छोटे लक्ष्य बनाओ
फिर बड़े काम आजमाओ,
कोई काम मुश्किल नही
लक्ष्य बनाओ उसे पाओ।

मेहनत और लगन

मेहनत और लगन का
पर्याय कभी मत ढूंढ़ना,
चाँद, सूरज के पर्याय ढूंढ़ोगे
तो मुश्किल होगा जीना।

मेहनत से बचने की योजनामें
हमारा समय बीता कितना,
मेहनत है पिता समान
और लगन को माँ समझना।

मेहनत मे लगा हुआ
जाना पहचाना और अनजाना,
हम पीछे रहकर इनसे
कामयाबी से मुँह ना चुराना।

मेहनत को ही मानव का
सबसे बड़ा आभूषण समझना,
और लगन को बच्चो
नाव की पतवार मानना।

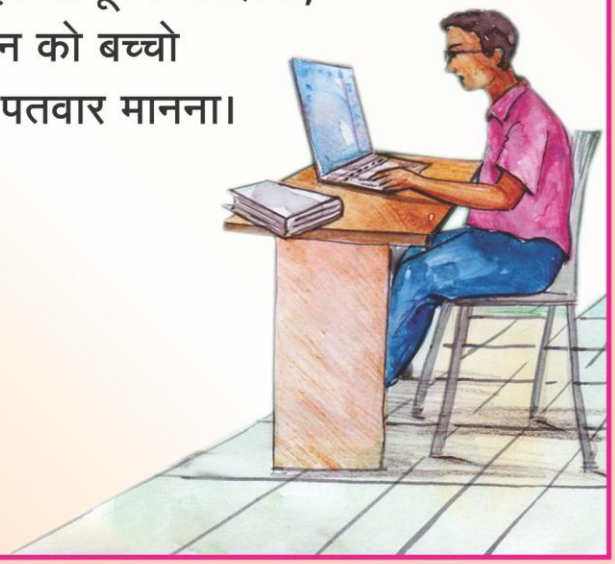

आत्मविश्वास

सच्चाईसे मेहनत कर
जब बढ़ता अपना विश्वास,
खुदपरके विश्वास कोही
कहते है आत्मविश्वास।

बच्चो बनो धनी इसके
मेरी तुमसे यही दरख्वास्त,
बिना इसके जीवन बेमानी
मुश्किल होगा लेना श्वॉस।

यह है पूंजी जीवनकी
बाकी सारा बकवास,
भागीरथ ने धरापर गंगा लायी
बना वह आदमी खास।

हर जंग आसान होगी
गर होगा तुममे आत्मविश्वास,
विजयश्री पाते रहोगे हरदम
रहेगी मंजिल तुम्हारे आसपास।

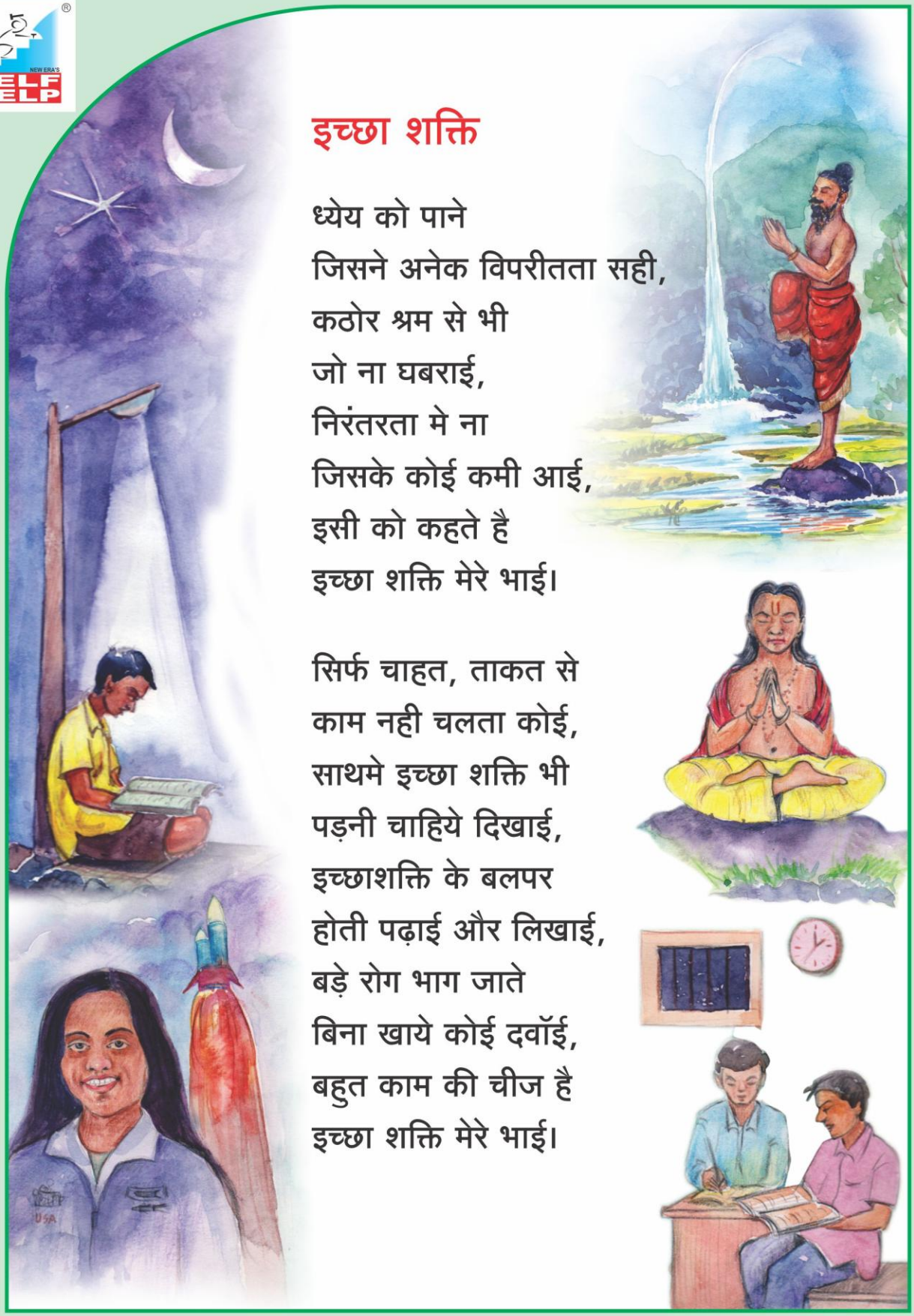

इच्छा शक्ति

ध्येय को पाने
जिसने अनेक विपरीतता सही,
कठोर श्रम से भी
जो ना घबराई,
निरंतरता मे ना
जिसके कोई कमी आई,
इसी को कहते है
इच्छा शक्ति मेरे भाई।

सिर्फ चाहत, ताकत से
काम नही चलता कोई,
साथमे इच्छा शक्ति भी
पड़नी चाहिये दिखाई,
इच्छाशक्ति के बलपर
होती पढ़ाई और लिखाई,
बड़े रोग भाग जाते
बिना खाये कोई दवॉई,
बहुत काम की चीज है
इच्छा शक्ति मेरे भाई।

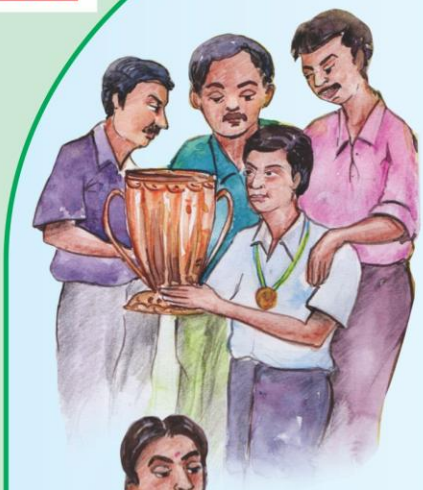

विचार

तुम्हारे विचार बनेंगे
जीवन जीनेके आधार,
इसीलिए प्यारे बच्चो
करलो शुभ विचार।

विचारोमे समाई दुनियाँ
है सृष्टि का सार,
कर्मो से विचारोको बाधों
करना मना सिर्फ विचार।

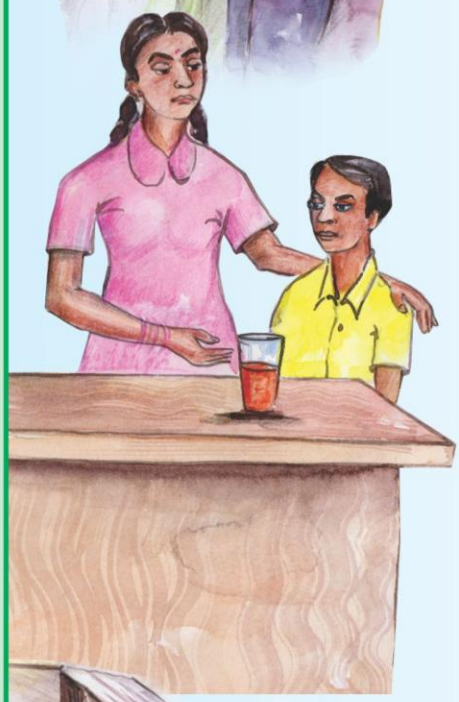

देखो सकारात्मक, नकारात्मक
विचारोके अनेक प्रकार,
बढ़ना चाहिए इससे आनंद
ना बढ़े मनमें विकार।

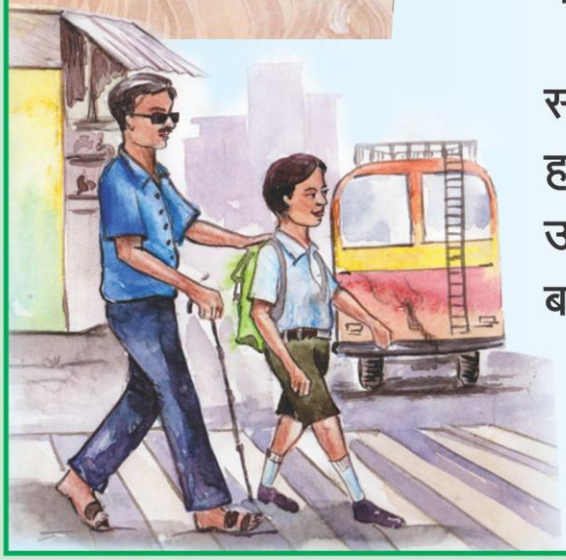

सकारात्मक ऊर्जा फैलाये
हम रखकर शुभ विचार,
उन्हे सहारा बनाये हजारो
बने ये अनेकोके आधार।

सच्चाई

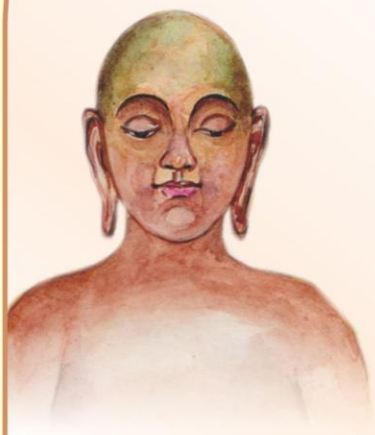

बच्चो सच्चाई है
जीवन की जरुरत,
बिना इसके नही टिकी
समाज मे किसीकी सूरत।

सच्चाई को झुठलाकर
हम करते अपना विश्वासघात,
झूठ छिपाने एक करते
मन पर अनेक आघात।

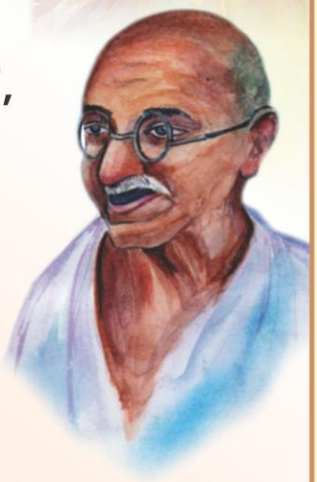

सच्चाई के बिना
बेअसर होगी शुरुवात,
नजरो से नजर मिलाकर
ना कर पाओगे बात।

सच्चाई हो सोच मे
और इमानदारी भरे जज्बात,
इसे अपनाने वाला
पायेगा प्यार भरी सौगात।

स्वाभिमान

अच्छे आचरण और कामोसे
जब बढ़ता खुदका सम्मान,
अपने नजरोमे ऊंचा उठना
कहलाता है स्वाभिमान।

अपनेसे होती शुरुवात इसकी
गाती दुनियाँ गुण गान,
खुदका सम्मान करने वाला
करेगा औरकाभी सम्मान।

यही सबसे बड़ी ताकत
करवाती अपनेसे बड़े काम,
इसके बिना जो जीते
वही कहलाते है गुलाम।

स्वाभिमानसे जीयो बच्चो
वरना जीवन होगा हराम,
उड़ जायेगा जीवनसे
सुख, चैन और आराम।

स्वावलंबन

स्वावलंबन याने शरीर का
अपने कर्मो को आलिंगन,
निजी काम खुद करना
कहलायेगा स्वावलंबन।

आलस्य वश हम लगते
अपने काम औरोसे करवाने,
हर काम के बाद
हम बनते खुदसे अनजाने।

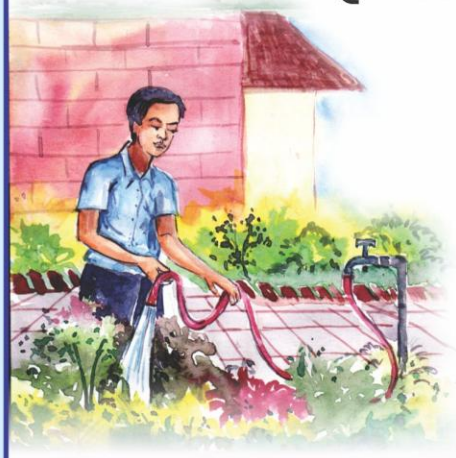

इसे अपनाकर देखो बच्चो
यह लगता फुर्तीला बनाने,
अपना काम करके तुम
लगते औरका दिल जीतने।

अपना काम खुद करो
ना लगना कभी शर्माने,
बापूजीने आजमाया था यह
भूले नही उन्हे आज जमाने।

स्वस्थ शरीर

प्राणायाम, व्यायाम करो
खाने मे पौष्टिकता हो भरपूर,
दबंग व्यक्तिमत्व बनेगा
संकट भगेंगे दूर।

स्वस्थ तन और मन
बदलेगी तुम्हारी तकदीर,
आनंद होगा जीवनमे
होगी सुंदर तस्वीर।

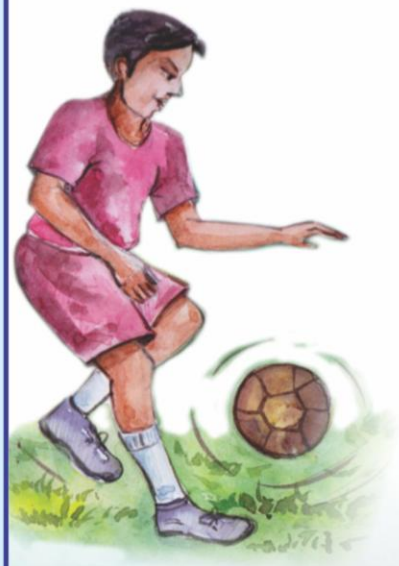

खेलो शुध्द हवा मे
करना तुम यह जरुर,
बदलते ऋतुओ से लड़ो
जीवन जीना भरपूर।

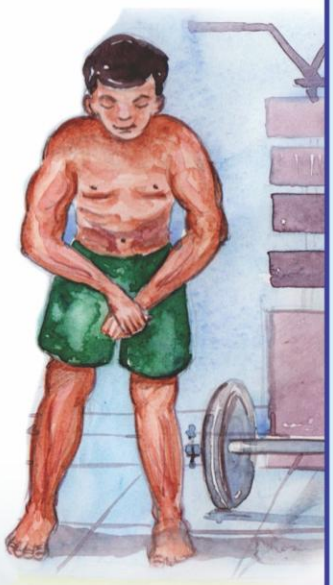

दूर रखो अपनोसे
सर्दी, खाँसी, बुखार,
सुंदर शरीर और बुद्धीसे
मिलेगा तुम्हे बहुत प्यार।

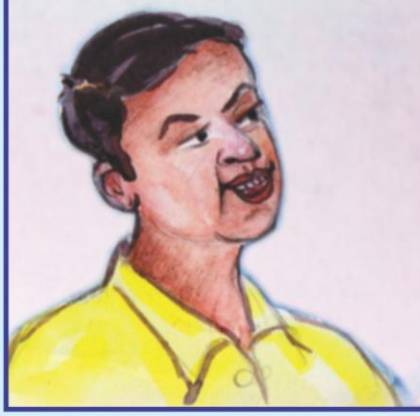

समय सूचकता

सही वक्त पे सही बात
करना समय सूचकता कहलाता,
बच्चो गर आजमाओगे इसे
यह बहुत काम कर जाता।

बातें और बुद्धि एक साथ
चले तो आती समय सूचकता,
बीरबल और तेनालीराम ने
बतलाई थी इसकी महानता।

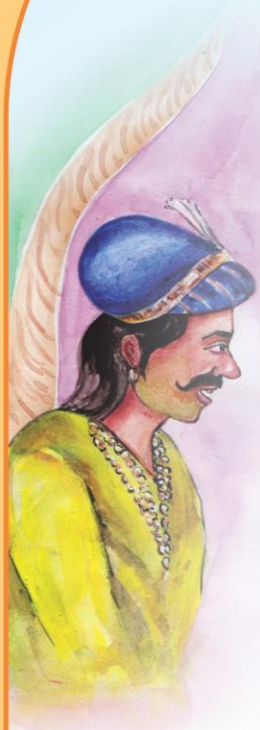

समय सूचकता ना होनेसे
बुद्धिमान भी पीछे पड़ जाता,
परिस्थिति भापके बोलनेसे
आदमी आगे बढ़ जाता।

बच्चो सीखो तुम यह
हर किसको यह लुभाती,
हर काम सुलभ बनवाने
यह बहुत काम आती।

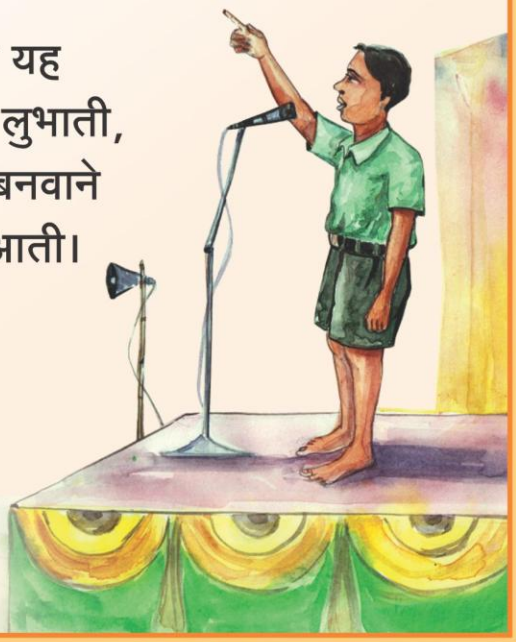

विद्यार्जन

शिक्षा पाने को
कहते है विद्यार्जन,
पाने ज्ञान का सागर
तुम दो तन-मन-धन।

विद्या ही करती
खूब इकट्ठा धन,
पाने इसे तड़पते
लाखों करोड़ो जन।

विद्या जैसा सुनहरा उपहार
पाता सिर्फ मनुष्य जीवन,
पाकर बहुत सारी विद्या
तुम जीतो ये गगन।

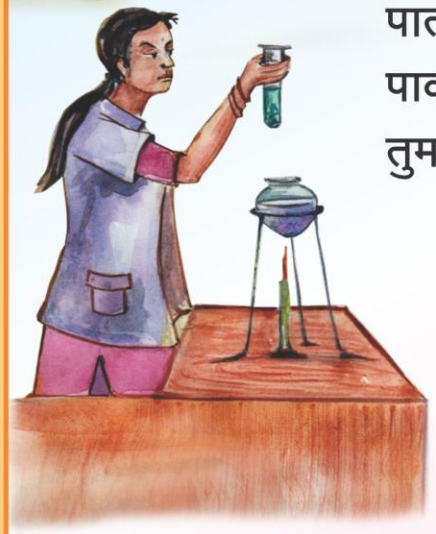

विद्याके सहारे सुलझेगी उलझन
सुखकर होगा यह जीवन,
इसीके सहारे ही सपने देखेगें
नित्य नये ये नयन।

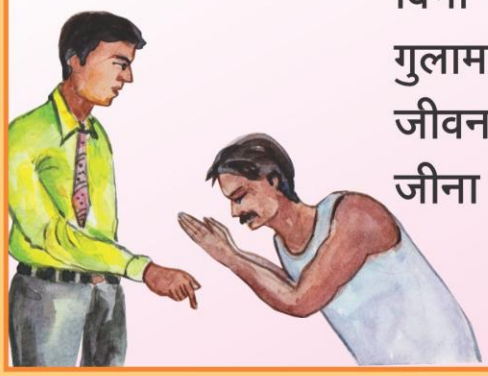

बिना विद्या के सहारे
गुलाम बन करोगे नमन,
जीवन बोझ बन जायेगा
जीना होगा बड़ा कठिन।

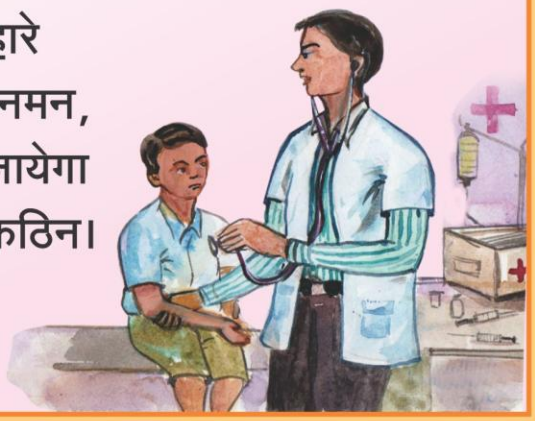

विनम्रता

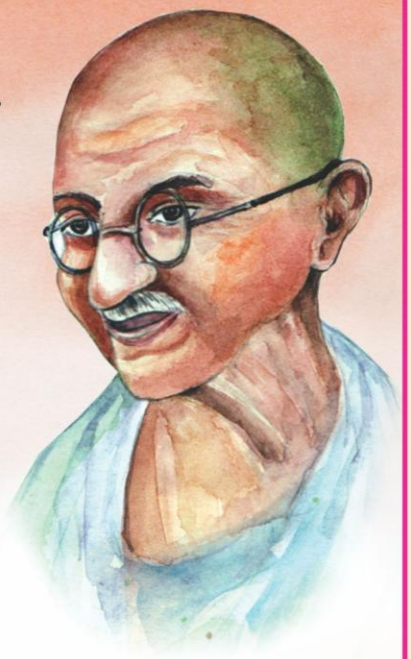

फूलों और फलोंसे भरा
पेड़ जैसे झुक जाता,
वैसे ज्ञानवान व्यक्तिही
विनम्रता को अपनाता।

विनम्रता आभूषण बड़ा
यह व्यक्तित्व बढ़ाता,
दिल मे आदर बढ़ाकर
सबका चहेता बनाता।

बल मे प्रेम नही
विनम्रतामे इसका झरना बहता,
यह है बड़ा हथियार
हर जगह यह काम आता।

सत्य और ज्ञान ही
विनम्रता को जन्म देता,
इसका ढ़ोंग रचाना
बड़ा महँगा पड़ता।

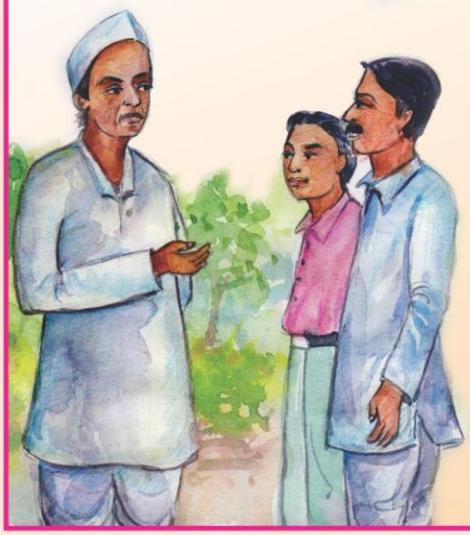

दिल हो, ना दिमाग
विनम्रता का जन्म दाता,
जिसके पास यह हो
उसके साथ है विधाता।

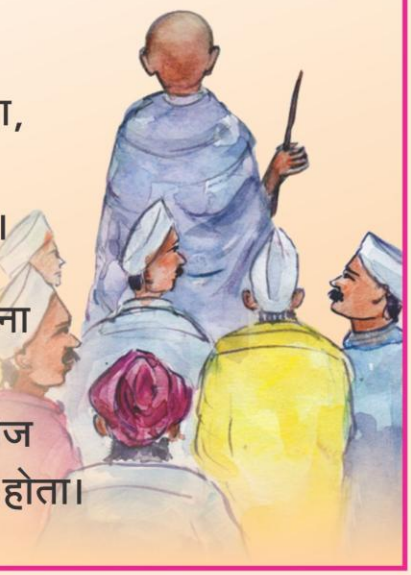

विनम्रता को ड़र समझना
नुकसान कर जाता,
विनम्रता बड़ी महँगी चीज
नही इसका कोई मोल होता।

सामान्य ज्ञान (जनरल नॉलेज)

जानकारी पूरी हो
भूत भविष्य या हो वर्तमान,
हर विषयों का अध्ययन
कहलाता सामान्य ज्ञान।

जानो इस दुनियाँको
रखो हर घटना पर ध्यान,
प्रतिस्पर्धा में महत्वपूर्ण है
नव विषयों का ज्ञान।

आज जरुरी है यह
रखो दिलमे सूचना तंत्रज्ञान,
जिसके पास इसका खजाना
दुनियाँ देगी उसको सम्मान।

यह सुरक्षा करेगा
और बचायेगा जान,
भीड़ भरे जहाँ मे
जी पायेगा इन्सान।

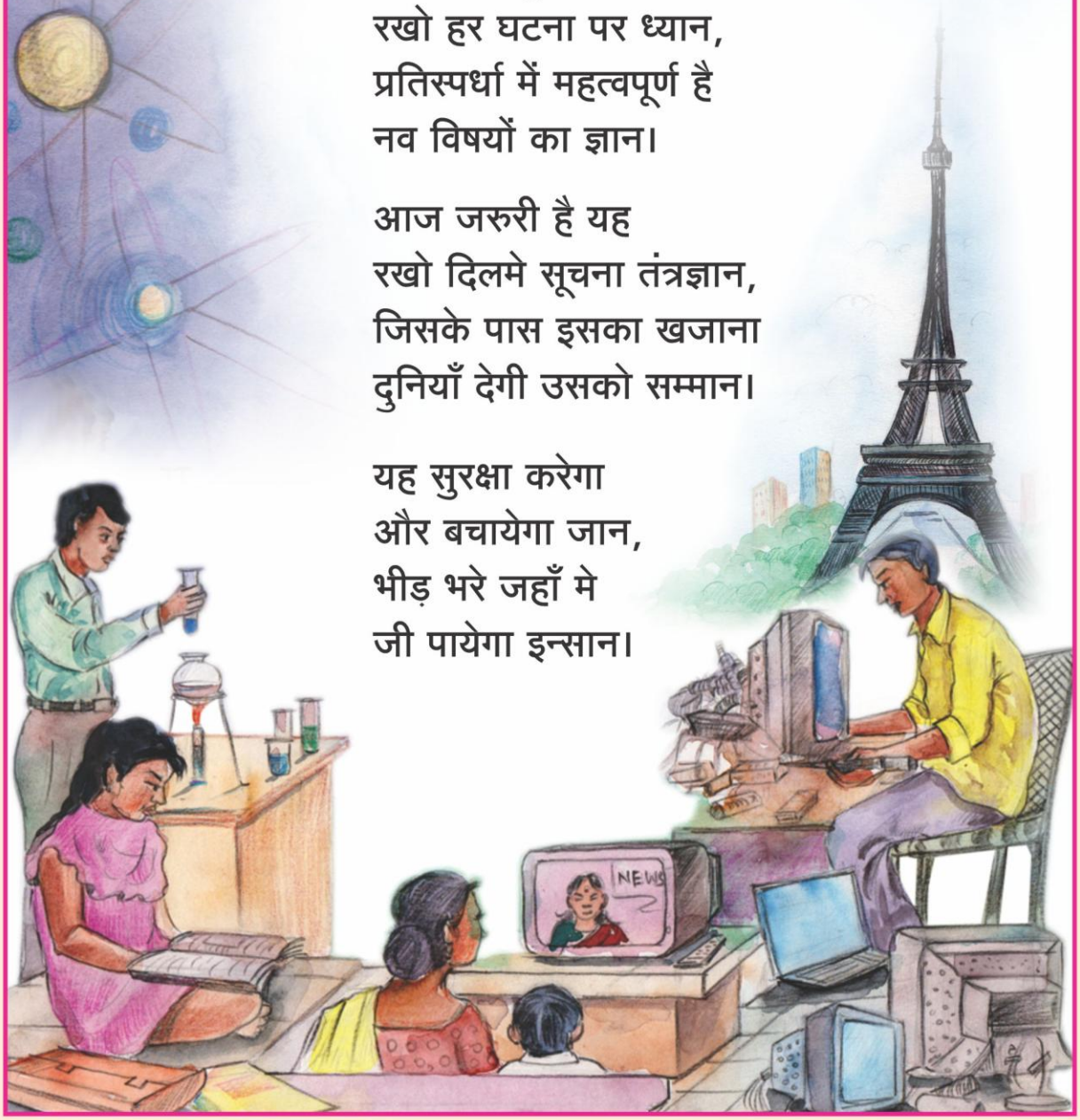

हम कैसे जीएँ

बच्चो अवश्य सोचो
हम कैसे जीएँ,
क्या करना है हमे
और किसके लिये।

आसमान को छूनें के सपने
देखना तुम नित्य नये,
माँ भारती की सेवा करो
समय निकालो इसके लिये।

सृष्टि और बुजुर्गोंकी
सेवामे दिन जाये,
रोज जिंदगी आशाओंके
नये पैगाम ले आएँ।

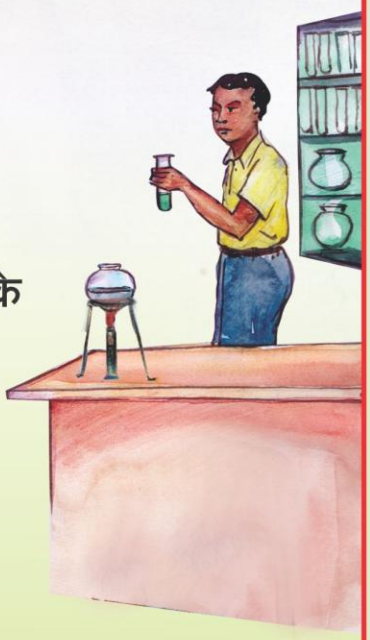

विज्ञान और आध्यात्म
तुम्हारा खूब साथ निभाये,
धरती को सुंदर बनाना
तुम्हारा कर्त्तव्य बन जाए।

आध्यात्म दिलमे और विज्ञान
दिमाग मे बस जाए,
अच्छा जीवन जीने का
तुम आसान तरीका पाएँ।

जरुर करो

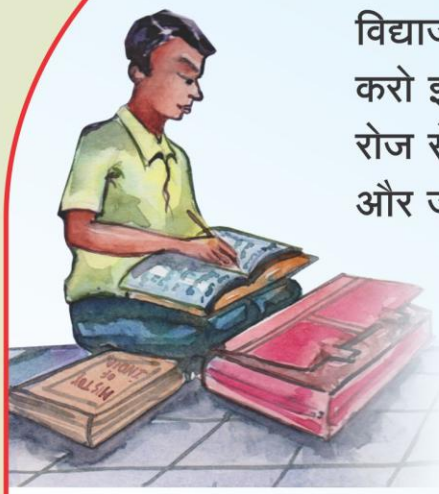

विद्यार्जन है अधिकार तुम्हारा
करो इसकी उपासना,
रोज सेवेरे उठकर वर्जिस
और जरुर तुम नहाना।

अत्याचार से लड़ो
सच्चाई के लिये चूनो मरना,
सामान्य ज्ञान इकठ्ठा करो
रोज नई किताबे पढ़ना।

अच्छे बच्चों के साथ
हमेशा तुम उठना बैठना,
हार है जीतकी पहली सीढ़ी
उससे ना कभी घबराना।

भ्रष्टाचारको दूर भगाओ
इसे कभी ना पालना,
कुछ पाने के लिये
मेहनत जरुर करना।

बुरी बाते और आदमीयों
को तुम जरुर पहचानना,
जीवन एक संघर्ष
पड़ता है सबको लड़ना।

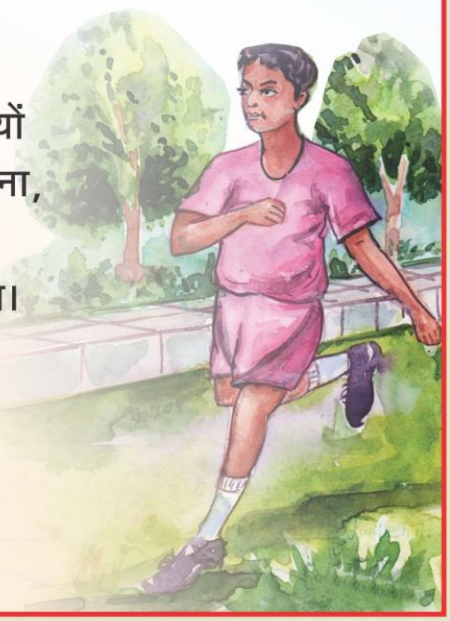

पढ़ाई के साथ तुम
खेल कूद से दूर ना जाना,
संगीत और सृष्टि को
तुम अपने गले लगाना।

कभी मत करना

बच्चो जिद कभी
तुम मत करना,
चोरी और झूठ से
हमेशा दूर रहना।

किसीकी उपेक्षा करना
है तुम्हे मना,
उपहास से दिल टूटते
इसका ना सहारा लेना।

सच्ची बात कहते समय
ना कभी शर्माना,
कानून तुम तोड़ोगे तो
पड़ेगा सजा पाना।

कभी किसी कमजोर पर
जुर्म ना तुम ढ़ाना,
जानवर पेड़ पौधों को
ना कभी दुख: देना।

बुरी आदत है
बड़ो का आदर ना करना,
बड़ा महँगा पड़ेगा
संस्कारों से मुँह मोड़ना।

कभी किसीका कही
ना तुम विश्वास तोड़ना,
दूर रहो मक्कारी से
और छोड़ो आपस मे लड़ना।

बुरी आदतों को तुम
अपने से दूर भगाना,
पड़ सकता है
इसीके कारण जान गवाँना।

सुनें ज्यादा बोले कम

सुने ज्यादा बोले कम
हम हरदम,
सोच सोच कर बोले
हो बातो मे दम।

ज्यादा बोलने वालोसे
भागते सुनने वाले हरदम,
सुनते सुनते बेचारो का
निकल जाता है दम।

अच्छा सुनने वाला
समझ पाता मर्म,
बोलने वालोका ज्ञान
अधूरा रहता हरदम।

बोलने वालोकी तुलना
होती बहते पानी सम,
सुनने वालोकी होती
गहरे ज्ञानी से ना कम।

दो कान और एक मुँह
के साथ हुआ हमारा जन्म,
हम ज्यादा सुने और
बोले कम हरदम।

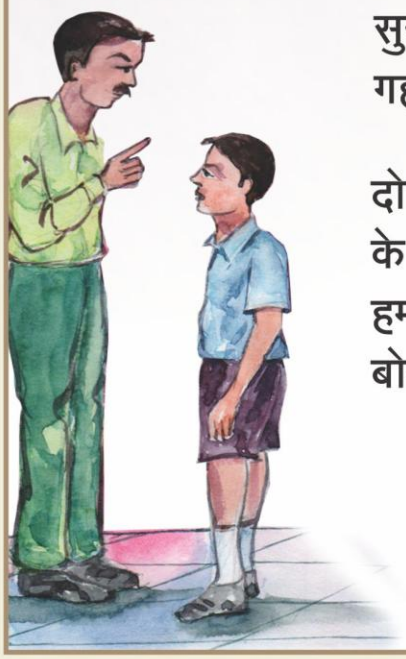

जान से प्यारा देश

चाहे हो कोई काम
मेरा कितना भी विशेष,
पहले मुझे लगता है
जान से प्यारा मेरा देश।

हिंसा के इस दौर मे
देता अहिंसा का संदेश,
आत्मशांती हमे सिखलाकर
कहता भूलो करना द्वेष।

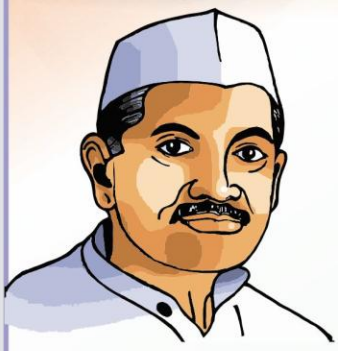

पाव धोती नदियाँ इसकी
रक्षण करते पर्वत प्रदेश,
पूरी दुनियाँ मे हो शांती
सिर्फ यही इसका उद्देश।

परंपरा और भाईचारा संजोता
अनेक प्रदेशोका एक देश,
इसपर जान लुटाकर दिखायेंगें
कितना प्यारा मुझे मेरा देश।

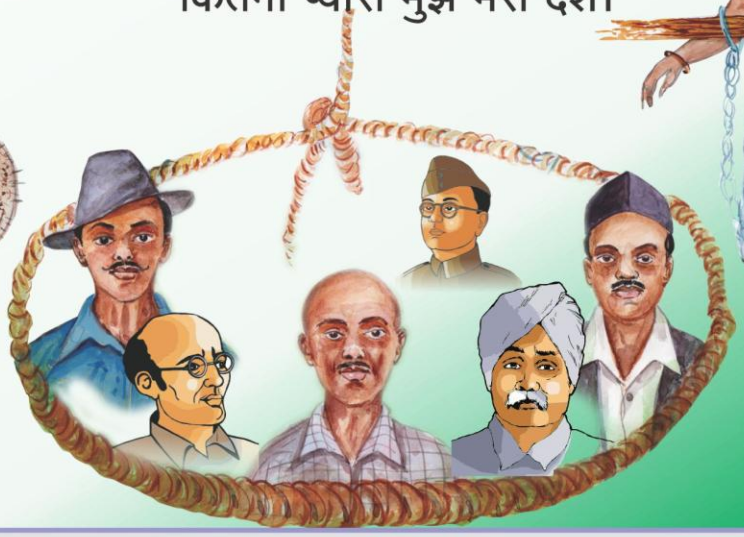

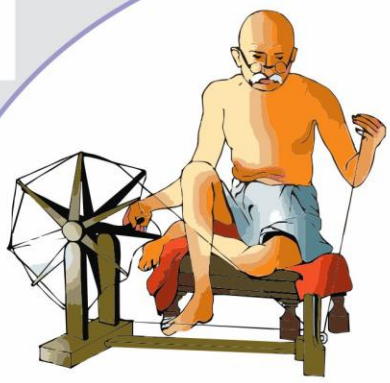

बापू

माँ बाप जिनमे
पड़ते थे दिखाई,
निड़रता थी सिखाई
चाहीथी सच्चाई,
वो बापूजी ही थे
मेरे भाई।

मोहब्बत करते थे
जहाँ भाई भाई,
सर्व धर्मो की
जहाँ थी इकाई,
अहिंसा भी थी
उन्होने हमे सिखाई,
वो बापूजी तो थे
समझ मेरे भाई।

गरीबो का दु:ख देख
उनकी आँख भर आई,
अपनो और कपड़ो से
ली फिर उन्होने जुदाई,
वो बापूजीही थे
मेरे भाई।

देश के लिये
जान जिसने गवाँई,
क्षमा जिसका हथियार
अहिंसा थी दवॉई,
आओ चले उस राहपर
जो बापूने बताई।

किस्सा ये वतन

प्रियजनोंसे भी प्यारा
ये हमारा वतन,
मेहनत और लगनसे
करेंगे इसका जतन।

इसीके लिये कंधो पे
उठा लेंगें गगन,
न्योछावर कर देगें
तन,मन धन।

लड़ना पड़ा तो
लड़ेगें सब जन,
बचनें नही देगें
लहूका एक कण।

नेर ना मिलायेगा
कोई एक क्षण,
इसी के लिये चुना
कईयोंने वीर मरण।

गुस्ताखी करने वालोंकी
बंद करेंगे दिलोकी धड़कन,
लहू से अपने लिखेंगे
किस्सा ये वतन।

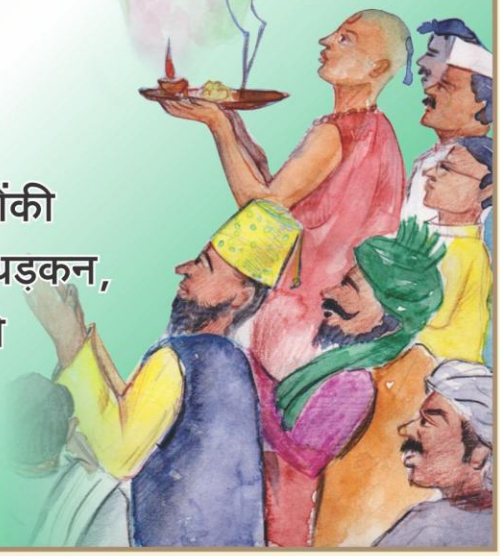

भाईचारा

हम सब में जब
बना रहेगा भाईचारा,
अनोखा होगा देश हमारा
लगेगा सबको प्यारा।

हिंदु मुस्लिम सिख्ख इसाई
यहाँ हर बंदा न्यारा,
निधर्मी इस देश में
हर कोई है प्यारा।

एक छड़ी टूटती है
एकता को नही ललकारा,
विभिन्न पुष्पों का पुष्पगुच्छ
लगता सबको प्यारा।

हम सबका यह देश
धरती अंबर न्यारा,
लुटायेंगे जान इसपर
लगता हमे दुलारा।

रहों जहाँ खूब बढ़ाओ
मेल जोल और भाईचारा,
सुख, शांती, कामयाबी पाने
लेना होगा सबका सहारा।

प्रदूषण

ध्वनी वायु जल के साथ
प्रदूषण बढ़ रहा संस्कृति में,
धरतीपर मानव रहे कहाँ
बोलो इस माहोल में।

जल दूषित वायु दूषित
कर्कश आवाज पड़े कानोमे,
दूरदर्शन धारावाहिक के द्वारा
संस्कृति का ऱ्हास समाजमें।

आओ बच्चो हिसाब लगाओ
क्या खोया क्या पाया इस दौर में,
देखो हमारा पूरा अधिकार है
जीवन कटे आनंद और मजेमे।

प्रदूषण वह राक्षस है
हमारा आनंद निगले क्षणमें,
आनंद के बिना जीवन
जैसे रहना कारागृहमें।

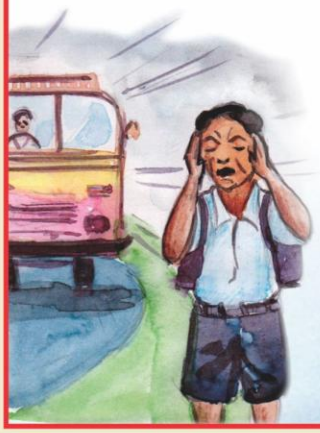

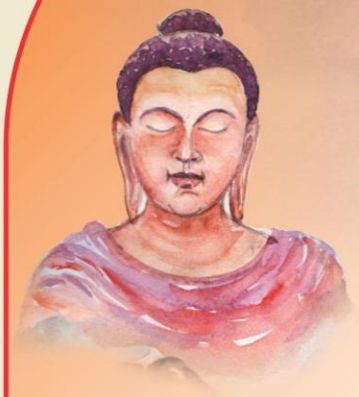

मेरा देश विशेष

जहाँ इन्सानियत है अभी शेष
ऐसा मेरा देश, सबसे विशेष।

यहाँ लिये है जन्म
कई महात्माओने विशेष,
बतलाया था दुनियाँको
कितना अलग हमारा देश।

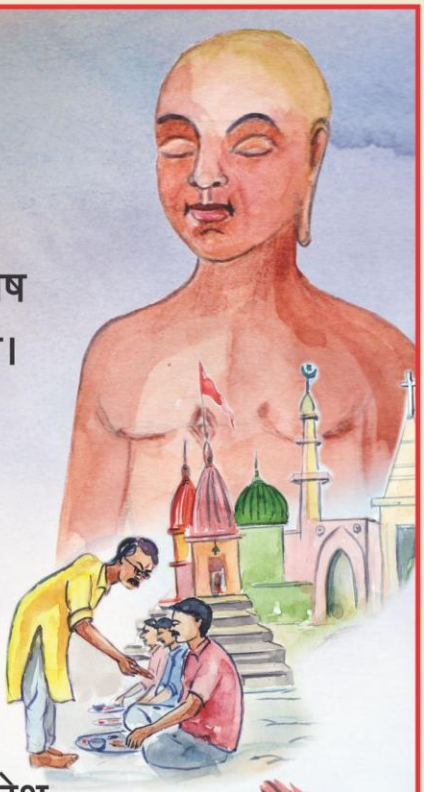

यहाँ पाठ पढ़ाये जाते
भूलनेके दु:ख और आत्मक्लेश,
आध्यात्मिकता के आगे फीके
पड़ते भौतिकता के आवेश।

विज्ञान में हम आगे
संशोधन हमारे बहुत विशेष,
धर्म पंथ बोली निराली
निराला है वेश।

आयुर्वेद, योग, गणित हमारे
दिये जीने के उपदेश,
पूरी दुनियाँ में आज
मेरा देश सबसे विशेष।

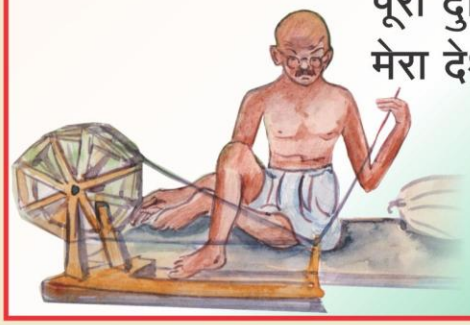

आगामी समाजोपयोगी साहित्य

नव निर्माण® के अगले दो भागों की कविताओं के विषय

भाग - ३

१) सावधानी	२) सार
३) सुविधा	४) स्वभाव
५) सहानुभूति	६) मदद करो
७) बचत	८) गुरुजनों का आदर
९) परोपकार	१०) उड़ान
११) शील	१२) धैर्य
१३) अमन और शांति	१४) हमारी जरुरतें
१५) आशा	१६) निराशा
१७) सहनशीलता	१८) स्वार्थ
१९) यश	२०) आराधना
२१) हस्ताक्षर	२२) आनंद
२३) शिष्टाचार	२४) संगत
२५) खुद्दारी	

यह कार्य नही क्रांति है।

भाग – ४

१) सकारात्मक सोच
२) करुणा
३) कर्मठता
४) नसीब
५) जियो और जीने दो
६) पानी का महत्व
७) रोगो से बचो
८) संगीत
९) खिलाड़ी वृत्ति
१०) हारना नहीं
११) स्तुती
१२) आशीर्वाद
१३) सृष्टि का आदर
१४) अपाहिजों के प्रति व्यवहार
१५) स्वस्थ मन
१६) विचलित न हों
१७) मनोरंजन
१८) वर्तमान मे जियो
१९) पढ़ाई
२०) भविष्य बनाओ
२१) भूतकालसे सीखो
२२) दोस्ती
२३) अच्छी आदतें
२४) जड़ता

हमारे मराठी भाषी समाजोपयोगी साहित्य
हारे हुये व्यक्ती को प्रोत्साहीत करने के लिए ३९ कवितायें

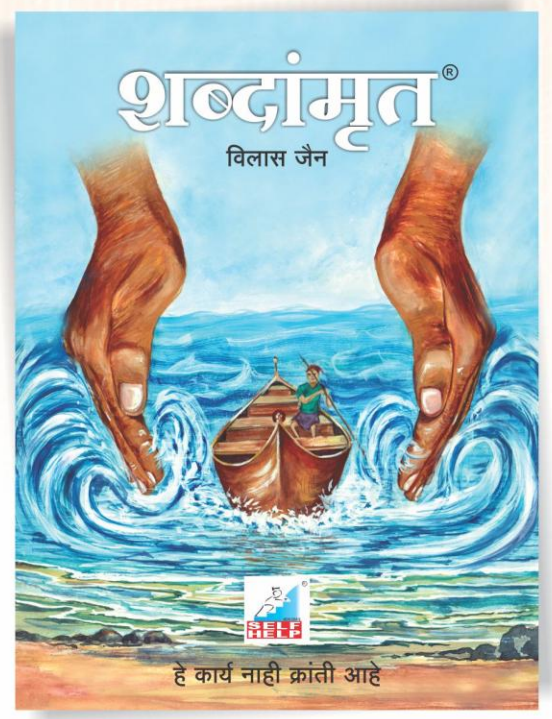

हमारे हिंदी भाषी समाजोपयोगी साहित्य
बच्चोंके मनपर संस्कार ड़ालनेके लिए २५ कविताओं **(नव निर्माण)** के अगले दो भाग

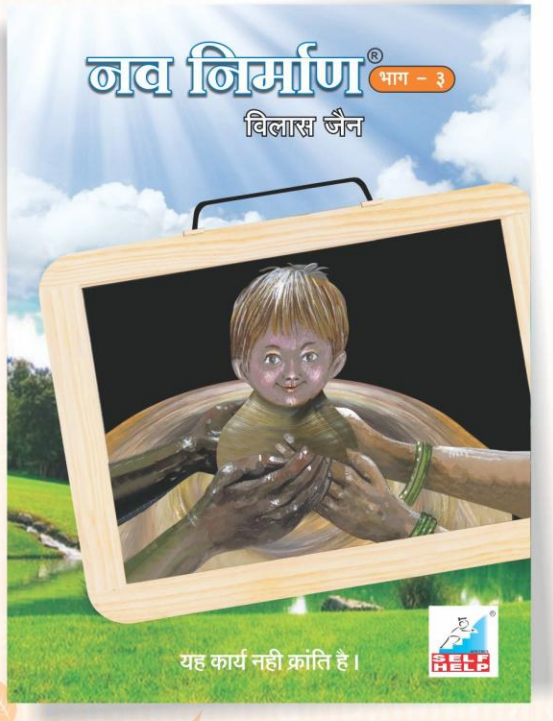

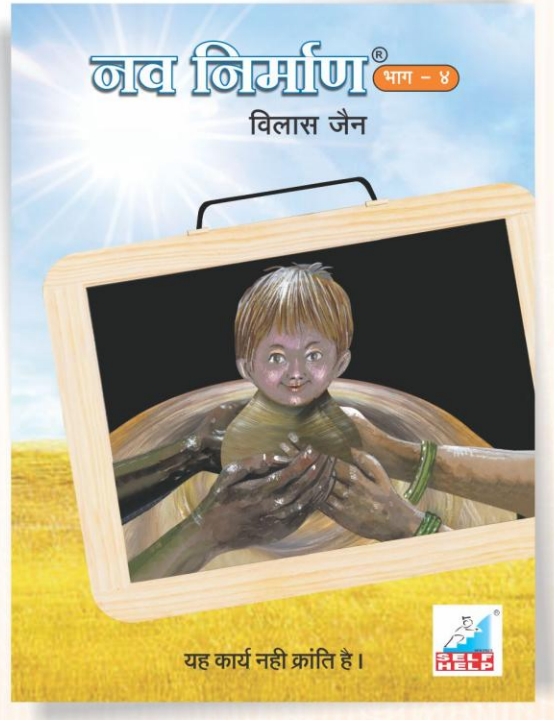

यह कार्य नही क्रांति है।

आभार

उन सब के प्रति
जो अच्छे हैं ।
अच्छा होने के लिये
सदैव तत्पर हैं ।
अच्छा हो इसलिये
प्रार्थना करते हैं ।
अच्छा करने के लिये
कड़ी मेहनत करते हैं ।
अच्छे व्यक्ति की
दिल से प्रशंसा करते हैं ।
और हरदम अच्छे के
पक्ष मे तन-मन-धन
देने को तैयार रहते हैं ।

धन्यवाद !

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।

विलास जैन

मेरा परिचय

पल पल में
बदलते जीवन का
क्या दूं मै
अपना परिचय।
पाने से ज्यादा
लौटा सकूं
यह मेरा है
दृढ़ निश्चय।
शिक्षा, उपाधि, अनुभव
का नही मोहताज
किसी का
अच्छा मनोदय।
लुप्त हो कुप्रथा
और बुरी आदतें
सुंदर, सुदृढ़,
समाज का
हो उदय।
अथक प्रयास
और ध्येय से
रचा कितना सुंदर
देखो मेरा परिणय।
कविताओं से निकले
अर्थ के सिवा
नहीं मेरा कोई
दूसरा परिचय।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है।

विलास जैन

किमत ☐ : १०० /-

यह कार्य नही क्रांति है।